VISION AHEAD
(An Online Peer Reviewed/ Refereed Bilingual International Journal of Multidisciplinary Studies)
VOLUME 1, JAN-DEC 2023 **ISSN:**

शहर की अवधारणा और ज्ञानेन्द्रपति की कविता

कुमार मंगलम
सहायक अध्यापक,
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

सारांश

हिंदी कविता के लिए शहर अथवा गाँव क्यों आवश्यक है? कोई भी रचना नगर अथवा ग्राम्य –संस्कृति को उसके सम्पूर्णता में कैसे रेखांकित कर सकता है? ये अपने परिसीमाओं और जीवन–शैली में अभिव्यक्त होते हैं। ये जन–जीवन और मनःमस्तिष्क पर हावी है, और बड़ी तेजी से बदलाव की चुनौतियों को उछालते है। हिंदी में गाँव के प्रति एक अतिरिक्त और कुछ हद तक रूमानी आग्रह रहा है, और शहर को हेय दृष्टि से या नकारात्मक रूपक के रूप में ही देखा जाता रहा है। इन बिन्दुओं के आलोक में इस आलेख में ज्ञानेंद्रपति की कविताओं में कविता और नगर व कविता और गाँव के सम्बन्ध को रेखांकित करने की कोशिश की गयी है।

हिंदी के कवि ज्ञानेंद्रपति अपने सुदीर्घ काव्य–यात्रा में शहर और गाँव के जैविक और अविभाज्य सम्बन्ध को अपनी काव्य सृजन के लिए उपयुक्त मानते हैं। इस आलेख में उनकी कविता के उन्हीं चिन्हों को तलाशने की कोशिश की गयी है। ज्ञानेन्द्रपति के कवि–कर्म में देखे–अनदेखे जीवन–क्षेत्रों में घूमने की ललक शुरू से मौजूद रही है। वे सुगम के सहचर न होकर जीवन के उबड़खाबड़ में भटकने और देखे हुए दृश्य के बाहर और रह गए दृश्य के अद्भुत चितेरे हैं। उनकी कविताओं में आया हुआ नगर–चित्र और ग्राम्य–जीवन एकहरा नहीं बल्कि जीवन के सम्पूर्ण विन्यास को पकड़ने की सजग और सयास कोशिश है।

मुख्य शब्दः *गांधी, नेहरू, अम्बेडकर, ज्ञानेन्द्रपति, निराला, देवीप्रसाद मिश्र, शहर, गाँव, कलकत्ता, बनारस, पटना, झारखण्ड, भूमण्डलीकरण, प्रेम, राजनीति, हिंदी कविता इत्यादि*